319 P
H 96
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1388/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 319

B

8/1811

891.431
Up 1 B

भूखी दुनियां

अमर शहीद उमाशंकर उपाध्याय
सहजनवां षडयंत्र केस

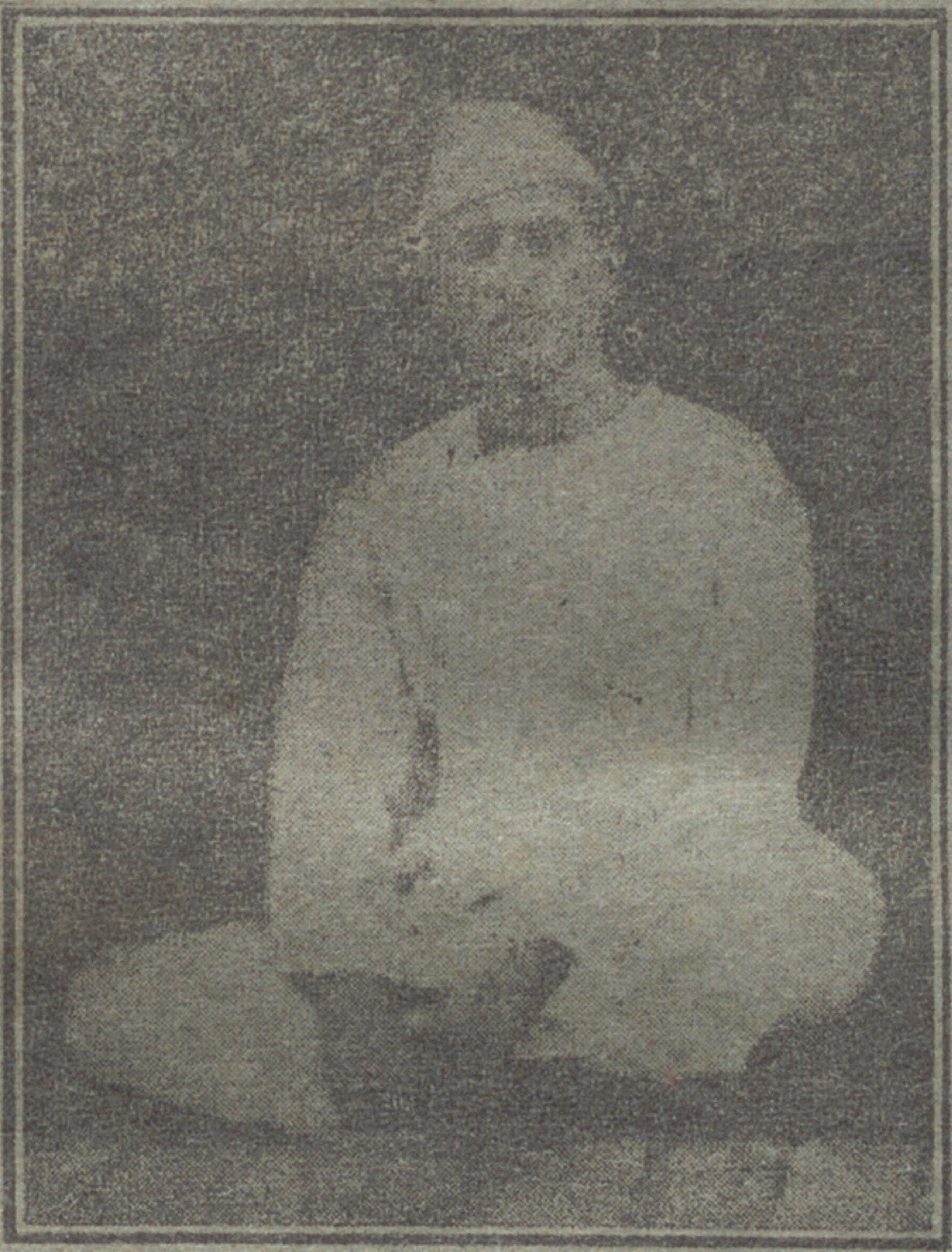

अगस्त क्रान्तिके अमरशहीद जिन्हें गोरी सरकारने बूंद बूंद पानीके लिये तरसा कर बरेली जेलमें दफना दिया।

प्रकाशक
सत्यनारायण सिंह बाल रूप शर्मा
आर० एस० पी, बनारस। मू० २ आना

भूखी दुनियां

अमर शहीद उमाशंकर उपाध्याय

सहजनवां षडयंत्र केस

अगस्त क्रान्तिके अमरशहीद जिन्हें गोरी सरकारने बूंद बूंद पानीके लिये तरसा कर बरेली जेलमें दफना दिया

प्रकाशक

सत्यनारायण सिंह बाल रूप शर्मा

आर० एस० पी, बनारस । मू० २ आना

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 319
Date 7.12.71
GOVT. OF INDIA

जमाना बदल रहा

जागो भारत के सन्तान मोर कहनवा लेवा मान ज्वान ताको तनी अंखिया उघार।

उठो उठो प्यारे भारत के किसनवां जमनवां बदली रहे। १ बदला देख कनून जगत में हल मच गये भारी, अपने अपने हक पर ठाढ़ भये नर नारी जमनवां बदली रहे। ५ तोहरे जूई न रंगत वाणै तनिको कानवा जमनवां बदलि रहे। उठो उठो प्यारे भारत के किसनवां जमनवां बदली रहे। जाग गये जिन्ना साहब वह पाकिस्तान बटाई। कांग्रेस कुर्सी पर बैठे तीरंगा फहराई जमनवाँ। वीरो तुम भी जागो छाड़ो आलस पनवाँ उठो उठो प्यारे। चापलूस सब जाग गये हैं पुलिस और पटवारी चूस लेत सब खून तुम्हारा तुम नहीं आंख उघारि। जमनवाँ बद्लि रहे। कबले सूतल रहबा खोला तू नयनवाँ। जमनवाँ बदलि रहे। उठो उठो प्यारे भारत के किसनवाँ। इस मजदूर किसान के खातिन वीर आजाद प्यारे, भगत सिह, यतीन्द्र और राज नारायन अस प्यारे उमाशंकर तोहरी खात र दे देहलैं परनवां। जमनवाँ बदलि रहे। उठो उठो। आजदी जब आयी गइल तब चाप लूस सब धाये, खद्दर की टोपी देके नेता में नाम लिखाये। जमनवाँ। कितने घुसे इसके अन्दर भीतर बेइमनवाँ

उठो उठो प्यारे । सफलाई विभाग अफसर के अब देत दोहाई ।पूंजीपति और जमीदारों को दिल से करैं सहाई जमनवाँ ।भूखे नंगे देखत मूदे (लय) नयनवाँ। जमनवाँ। उठो उठो। चोर बाजार गरम भारत में चौनिस होत लुटाई। अब किसान मजदूर का सब मिल गला दबाई । जमनवाँ। शर्मा बालरूप कहते देखा खोलि के नयनवाँ । जमनवाँ बदलि रहे । उठो उठो प्यारे भारत के किसनवाँ जमनवाँ बदलि रहे। ज्वानों ताको तनि अखिया उघार । बदलत बाय जमनवां सगी लौदन करिहैं सहइया तवौं लौटी दिनवां तोहार ।

क्या करैं

भारत के किसान लेके ललका निशान, चलो पूंजीपति यन के मैदान। कायम करो हुकूमत आपन ऐ मजदूर किसनवाँ ना। टेक । दिन भर काम करत खेतन में मिलै न भर पेट खाना लोहू— खून खेत में देकर पैदा करते दाना । तेहि पर सुनत मेहनत्र ना । ऐ म० १ । पुलिस सिपाही चौकीदार औ पटवारी। बेइमाना साहु पुजारी लूटें तुमको करते सब मनमाना। ई भारी दुश्मनवाँ ना ऐ म०। २ मिल में काम करैं मजदूरवा मिले न भर पेट खोटा, पूंजी पति सब बइठल लूटें लिखधा करके कोटा दिन दिन भारत खजनवाँ ए म। ३ मिल वालों का पेट देख नहिं पड़े नाद में चोटा कर मेहनत नहिं खाना पाते कहैं कर्म है खोटा. कैसे फिरी

री जमनवाँ पे म० ४ । धोका देके वोट कमइलै सुनल इतनी भाई, जब गये कमेटी दिल्ली में दिये उलटे कलम घुमाई, तजि के हया शरमवाँ ना । पे म । ५ हर का मन में रुपया माँगै यह देखो चतुराई, कहैं रंग संग जल्दी छोड़ो देता अभी चेताई, तब ही फिरी जमनवाँ ना । पे म ६ । भेद तजि करो संगठन हो जाओ तैयार' कब्जा करो हुकूमत पर बस देकर के ललकार तबही मिली चयनवाँ ना । पे मजदूर ।

जमनवां आइगइलैं

गरीब किसान के घर एक ही रोटी जेको दाल नहीं घिउ पोती, जिनके लागे है अनेकों ठगहार ।

हमरे जागी जाइत भारत के किसनवाँ जमनवाँ तुम्हरों आइ गइलै ना । तुहंके लूटलै राजा बाबू पूंजीपति जमींदार, अपने बैठ मजा उड़ावैं दुख ना सुने तुहार, तेहि पर बेचलैं गहनवां, जमनवां तुरो आई गइ गैलैंना । अन्न कमाला तुहई भैया पेट न भरे तुहार बिस्तर नहीं बाय देह पर नंगा है परिबार, तेहि पर मारेलैं मेहनवां, जमनवां तुंहरो आइ गइलैं ना ।

कपड़ा आवे बेसुमार, नफा कमावैं सहूकार, भैया तुहरी बेरियां कई दिहलैं बहनवां जमनवां । पटवारी पेटरौल दारोगा और मुखतार वकील, बारी बारी तुहंके लुटलैं तनिक न लावैं पीर, कहवां केतनो गिनाई दुसमनवां जमनवां तुहरो आई० गइलैं ना जो चाहो मिटि जाय जु-

तुम तौ सुनि एक उपाय क्रान्तिकारी पार्टी में भरती हो इ करलो संगठन बनाय; कहवा लेके चलवाना, संगी ल लका किसनवां जमनवां। मजदूर किसान भाई दो इन-को समझ.ई मेल करें आपस में लँ अपनी सर कार बनाई। तबै मिलि हैं तोहके चयनवां। जमनवां तुह्ते आई। जिनके लागे हैं अनेको ठगहार। शर्मा सम-झावैं लूटत हउवे दुनियवां तोहके मितउ उठिके गठिया संभार आपन तबै गूजर हाई तोहार।

भूल गये

आयल बाय तिरंगाकै जमान भइया धनी लुटि लूटि भरत बाड़े खजनवां किसाननकेना बाय कोई पूछनहार, अइसन आइल बाय दुख दइया मोर सहइया के करी। बिपत्ति अपार धारके नीचे पड़ो हमारी नैया, डूब 'बा मोर गरीब किसनवां की नइया मोर सहइया। है यह नाव पुरानी जिस पर होती खूब लदैया, कर लगान महसूल टैक्स यह गांजल जात सवैया मोर सहइया के करी। इनको ना काइ है रोकवइया मोर सहइयो के करी। वोट का जब रहे जमाना तब सब कीन्ह करार, पहले हम कि सान के दुख के जाते कर देव पार' भूल गये कुर्सी के ब इठइया मोर सहइया के करी। चोर बजारी औ घुसखो-री हर समाज में जारी है, नित गरीब के गला दबावें देखो आंख उघारी इसमें होती खूब लुटइया, मोर सहइया के करी। जमींदार पूंजीपति के आगे नहीं किसी की

Bhooki Dunya in Hindi
2 copies
U. P. Govt.

NATIONAL ARCHIVES
LIBRARY
No. 17
Date 19.1.50
GOVT. OF INDIA

धनिन के राज

किसनवाँ आइल मुसीबत हमनी पर बरियार बा,
कोई न काटन हार बा ना।

रहल भरोसा नेहरू जी पर करिहैं बेड़ापार जी,
नाव चढ़ाकर हम लोगन के छोड़ दिहलन मझधार जी।
बीच भँवर में नैया डूबत कोई न खेवनहार जी,
चहूँ तरफ मैं देख रहा हूँ सूझत नाही किनार जी ॥
करी हम केकरा से पुकार, नैया खेके लगावत न पार।
इस विपत्ति में कोई न सुननहार बा ॥ कोई० ॥
देखत हूँ हर तरफ से आफत सर पर आइल बा,
जे उठत हमरे कारण उसको जेल सजाइल बा।
चारो तरफ से जाल डालकर रस्ता मोर घेराइल बा,
किसान मजदूर कै जियरा तड़फ तड़फ घबड़ाइल बा ॥
जब तक रहलन बीर सुवास, लागल रहे उनहीं पर आस।
यही संकट समइया कहवाँ उ सरदार बा ॥ कोई० ॥
अबहीं अंगरेजन के पठशाला के पढ़इयां बटले बा,
जमींदारी के सगरी खाता पटवारी के हाथमें बटले बा।
हरी बेगारी नजराना पहिले से दूना बटले बा,
गरीबन कै नहीं पेट भरत है अबहीं भूखमरिया बटले बा ॥

भइलन जबसे हिन्द अजाद, गरीबवा हो गइलन बरबाद ।
देख मौज उठावत पूँजीपति जमींदार बा ॥ कोई० ॥
सन् बयालिस में लूट गये थे जितने खद्दरधारी जी,
आ:जकल के नेता बनकर करते चोर बजारी जी।
घूस खोरी में रूपया लेकर करते धन तैयारी जी,
हाय हाय कर रोवत बाटे किसानन के नरनारी जी ॥
जिसपर रहल भरोसा भारी, ऊ दुश्मन हुए हमारी।
बहता नयनन से अब आँसू बेशुमार बा ॥ कोई० ॥
कैसे होई दूर संकठ साथी झारखंडे राय जी,
सब नेता मिल आर० एस० पी० के कींजे राह बताय जी।
आस टूट गये सकल ओर से कोई न मिलत सहाय जी,
रक्षक बनकर आर० एस० पी० अब कीजै जल्द उपाय जी।
नहीं मिलत वस्त्र अरु अन्न, रास्ता भइलन सगरी बन्न।
कुछ बोलय के ना हमनी के अखतियार बा ॥ कोई० ॥
दिनभर काम बराबर करते सब मजदूर किसान जी,
तिसपर भी नहीं पेट भरत वा हैं सबही परेशान जी।
कांग्रेस के नेता सब्र धरावत करि करि के एलान जी,
कुछ दिन धीरज मनमें धरिये तब होई कल्यान जी।
केदार कहते हैं बिलखाय, सुनिये आर० एस० पी० मनलाय।
हरिये जल्द मुसीबत इतना ही इजहार बा ॥ कोई० ॥

नैया मझधार

किसनवाँ भइया सुन कइसन आफत आईल बाय
मन देख देखे घबराइल बा ना।
पंडित नेहरू जी कहे थे हूँगा जब आजाद जी,
पूंजी पति जमीदारों को कर दूँगा बरबाद जी॥
किसान-मजदूर सब शामिल भइन, सुनकर यह फरियाद जी
भारत के नर नारी बतिया यह यादजी॥
लेकिन भूले जवाहरलाल, हटवलन गरीबन पर से ख्याल।
देख पूजीपतिपर से कइसन गांठ बंधाइलबा ॥म०॥
केन्द्र में शामिल भामा भइलन चेही जान मथाई जी,
डाक्टर कम्पोडर को सब जानत मुकुर्जी महासभाईजी।
किसका किसका नाम गनाई बलदेवसिंह पूरा कसाई जी॥
कौन उम्मेद पर शान्त होकर हृदय में सब धराई जी।
ध्यान देते नहीं पटेल, करते हमहन के संग खेल,
मजदूर किसान के नैया बिचहिं धार वहाइलबा ।म०।
देखता हूँ सब जगह पर मालिक वन गइलन नवाब जी,
हैदराबाद निजामशाही जिना हैं पाकिस्तान जी।
कांग्रेस के अन्दर पूजीपतियन के सहना पड़ता दाब जी,
भ्रष्टाचारिन के फंदा में रखना है निज आब जी।
करिये अपना बल के आस छोड़ दुनियां के विश्वास बा ॥म०॥

कौना डर के मारे पीछे पांव धराइल,
लाल निसान हाथ में लेकर कर दीजौ निज नाम जी।
रण के अन्दर कूद पड़ो मत कीजै विसरामजी,
पूंजीपति जमींदारी का करदो काम तमाम जी।
चुप रहने से नहीं बनेगा, बिगड़ी आपन काम जी,
भइया मजदूर किसान, करदो दुनियां में एलान।
खतम करूं नबाबी राज, जो सरपर आज लदाइलबा।म०।

सन बयालिस का याद दिलाता, आफत जो सरपर आया था,
सरकारी करमचारी ने जो हमरे साथ दिखाया था।
कौन गरीब है बाकी बचा जो न आँसू बहाया था,
कांग्रेस कही मैं बदला लूँगा तबसब्र हृदय में आया था।
लेकिन आज तलक मैं देखा, नहीं हुआ किसी का लेखा,
यह देख देखकर आर-एस-पी अलगाइल बा ।।म०।।

मालूम हुआ कि गोरे के संग सभी बिपतिया भागलजी,
आजाद हुआ भारत जब से भोर दूना दुखवा लागलजी ॥
खद्दर के टोपी पहन पहन कर बहुत नेता लोग जागलजी।
तन-मन-धन हमनी कर लूटत, बनाबनाकर पागलजी ।।
देख देखकर चोर बजारी कलपत झुंड-झुंड नरनारी,
कैसे होई गुजारा सकल चीज महँगा भयल बा ॥ म० ॥

किसान-मजदूर का यही बिनय है, साथी झारखंडे राय जी,
जे नेता हैं आर, एस, पी, के सुनिये ध्यान लगायजी।
इस समय संकट में पड़कर हम सब भये असहायजी,

केदार कहत कि नैया डूबत दीजै पार लगाय जी।
आँसू बहता है दिन रात सहते सहते उत्पात,
बिपति आप गरीबन पर मैंड़रायल बा ॥ म० ॥

❁ रोग पुराना ❁

बदला सही जमाना पर अब ही सब रोग पुराना,
नाजानी कवनी किसिम कै मिललबा सुराज।
अब ही देखो वही जमाना ये भारत के बसिया ॥ टेक ॥
करके गौर देखो दिल में तो सकल बेकारी हइये बाय।
मजूर राज ना बनिहैं जबले नहीं बेकारी जइहैं ॥

❁ ए भारत के बसिया ❁

तब ले ना कुछ घरी ठेकाना हो भारत के बसिया।
जमीदार का लूट जबन भारत के मंभारी हइये बाय ॥
कैसे भला होयेगा जब चेट्टी, बलदेव में सिकारी हइयैबाय।

❁ ये भारत के बसिया ❁

है जारसिंह क्रान्तिकारीं, सारा जग का हितकारी।
कुचल के कइलस पिसाना ये भारत के बसिया ॥
परदेशी से कमती नहीं अधिक बिमारी हइयैबाय।
जमीदार, सेठ ठगहारा यह कठिन तिजारी हइयेबा बाय ॥
मरता गरीब मजूर चोर बजारी हइयेबाय।
नफ़ाखोर हैं थोर नहीं चहुँनिस बहकारी हइयेबाय।
नजराना और बेगारी केतने फस लेजाय जमीदारी हइयेबाय।

कितने आँखों में धूल झोंके मनमाना (भारत)
जालिम थानेदार मुन्शी पटवारी चारिओर हइयेबाय।
है वकील की फीस वही घूस खोरी हइयेबाय ॥
चोरी, डाका, बेइमानी अब ही सब हइये बाय।
अब से चेता भाई मजदूर-किसान राजला बनायी (भारतके)
'शर्मा' कांग्रेस में देखा ई सुस्ती भारी हइयेबाय।
सुबास कै सिपाही नौकरी न पावैं ई बेइमानी हइयेबाय ॥
देखो जनता पर दुख अधिकारी हइयैबाय।
कहते लौटन आई, आर, एस, पी, के सँगवा चला।
तबै लौटी दिनवाँ हमार ॥

—०—

❀ क्रान्तिकारी ❀

उपधिया उमाशंकर कइलैं बड़ि बड़ि मरदाय
भाय तनी सुन लेबा कनवा लगाय।
भारत माता के कारन दे देहलैं परनवाँ
खजनवाँ लूटी लिहलैं ना,
उसी समय का यह किस्सा अंग्रेज फँसा था लड़ने में,
हिटलर हाहाकार मचाया था गोरों को खूब कुचलने में,
रूसी सेनायें साथ साथ थीं लगी मारने मरने में,
जापानी सेना का मुश्किल था सिंगापुर से हटने में।
चौबीस मार्च को क्रिप्स सुलह करने दिल्ली था आया,
ठीक उसी दिन क्रान्तिकारियों ने था बिगुल बजाया ।खज०॥

गोरखपुर सब चढ़े ट्रेन पर सहजनवाँ में आ गये।
खींच दिया जंजीर इन्होंने तब सब थर्राय गये।
पर्चा लाल बाटकर जनता को समझाय दिये,
पंचायती राज होगा कोई तुम्हें नहीं सतायेगा।
जुलुम मिटेगा सब मेहनत कर खायेंगे,
कोई पर ना रहिहैं कोई कै सेखी सनवाँ। खजनवाँ ॥
लुटलैं अफसर सब ही मूद के नयनवाँ।

खजनवाँ लूटी लेहलैं ना।

एकरे तीन महीना पीछे भइलैं बयालिस कै आन्दोलनवाँ,
तब क्रान्तिकारी लड़लैं हाथ पर धयके जनवाँ। खजनवाँ ॥
बोतल में बम भेजलैं उमाशंकर अन्दर जेहलखनवाँ ॥खज०
दिन दहाड़े लूट लिये लखनऊ में बैंक कै खजनवाँ,
शेर बबर कोतवाल पर तानो दिहलैं निसनवाँ। खजनवां ॥
ये सब रहलैं क्रान्तिकारी सह ना सकलैं अत्याचारी,
रोकलैं बार बार फिर रोकिहैं सरकार कय जुलुमवाँ ॥खजनवाँ
रहलैं चौदह माह फरार इनाम छपलैं आढ़ाई हजार
पकड़ल गइलैं ग्वालियर के मैदनवाँ ॥ खजनवाँ ॥
चला केस लखनऊ में जज ने फैसला सुनाय दिया,
दो दो कालेपानी का एक ही सजाय दिया ॥
लिखलैं जज ये सब हैं क्रांतिकारी (कैसेलायें) बम—
फेंकैं ऊपराँ अत्याचारी (निरभय होय दिन कै)
ये सब डाका डालैं आजादी के करनवाँ (खजनवाँ लूटी०)

जेहल भितराँ सरकार कइलस बड़ बड़ अत्याचार,
उमाशंकर मर मिटै के हो गइलै तैयार।
जेहल भितराँ कइलैं पैसठ दिन अनसनवाँ (खजनवाँ)
बूँद बूँद पानी खातिन मर गइलैं,
माता से भी भेंट तलक करै न पउलैं।
मजदूर किसान राज के खातिन दे देहल आपन जनवाँ
(खजनवाँ लूटी लेहलैं न)
लसिया केहू न पउलैं सगी खनदनवाँ (खजनवाँ)
उमाशंकर समझावाँ आवो पूँजीपतियों से छिड़ल बा लड़ाई
भाई सभै रहा कमर कस के तैयार,
हरीसिंह कै बोझल बाटे नइया भइया खेके मझधार से
लगावा बेड़ापार॥

❀ सरकार नाहीं हमार ❀

रो रो कहैं किसान मजूर, हमसे भइलै कवन कसूर।
भूल गईला हे भइया जवाहिरलाल।
अबके सुनिहैं हम सब दीनन की पुकार हो,
सरकार पूँजी पतियन की बनी॥
अंग्रेजन के हम खेदली माना चाहे जिन माना।
भगतसिंह ऊधम बनी॥
सुबाष के हे भइया पहिचाना, पूजीपतियन की बनी।
केकरे घरवाँ इनकर भईलै अबतार हो,

सरकार पूंजी पतियन की बनी।
उमाशंकर जेलके अन्दर मुअलै अनशान कईके।
बालरूप कैलाश की करनी सोचा धीरज धइके॥
पूँजी पतियन बेड़ी पहिरे डकलै जेहलकै दीवारहो सर०॥
साढ़े ग्यारह माहके अनशनवां मुक्तीनाथ केशव शुक्ल जी,
रहलै इनही के साथे साथ। पूँजी पतियन०॥
भारत माँके कारण सहलैं कष्ट अपार हे, सरकार०।
हमरे कारण कितना दुःख सहलैं दादा पोगेश।
पढ़ा जीवनी उनकर देखा सहलै केतना क्लेश॥ पूंजी०॥
भयल ना किसान कतहूँ कै, करैं मजा गद्दार हो, सरकार। पू०
चोर बजारी घुसखोरी दिन पर दिन बढ़ती जाय।
जमींदार नित करैं जुल्म हमसे अब नहीं सहाय॥ पूँजी०
काँग्रेस सरकार हमरे संकट पर ना कुछ करै बिचारहो। सर०
आर, यस, पी कै हमारे नेता हम पर कइलै ख्याल।
हँसुआ और हथौड़ा वाला लेके झंडा लाल॥ पूँजी०
चललैं सब गरीबन लेकर के ललकार हो॥ सरकार०
काँग्रेस ना देख सकै हम सबको बढ़ते आगे।
दिल में डाह भइल पैदा ये सब गरीब अब जागे॥ पूँजी०
हमरे नेता चट हो गइलें गिरफ्तार हो, सरकार॥ पूँजी०
कहते हरी अपने हथवा लोपतवार नाहीं "या डूबैलेमझधार।
भूल गइला हो भइया जवाहरलाल॥

आज पागल चले

दीन दुखियो का संकट मिटाने;।
आज पागल चले सर कटाने ।
रात दिन हम पसीना बहाते,
जिन्दगी भर लहू हम सुखाते ।
किंतु मिलती नहीं हाय रोटी
कहते किस्मत तुम्हारी है खोटी
ऐसी किस्मत को ही अब मिटाने ॥ आज पागल
मिलके जिन्ना जवाहर की टोली,
खेली भाई के खूनों कीहोली।
हाय बेकस गरीबों की आहें
फटता दिल सुनके चीखें कराहे
उनके घावों पै मरहम लगाने॥ आज पागल ॥
मांओ बहनों की अस्मत बुलाती
जङ्ग करने को टोली ये जाती
पैसे वालों ने जो लम ढाया
आज करने को उनका सफाया
अपने उजड़े चमन को बसाने ॥ आज पागल ॥
वीर हमने कसम आज खाई
कस कमर तेग हमने उठाई।
लाश पर लाश अब तो गिरेगी

खूँ की धारा समुन्दर भरेगी।
पाया जुल्मो सितम का हिलाने ॥ आज पागल ॥
सारी दुनियां के मजलूमो आओ
कूच का डंका बीरो बजाओ।
विश्व को ये विषमता जलाकर
पूँजीवादी-प्रथा की चितापर।
लाल खूनी पताका उड़ाने ॥ आज पागल ॥

विलाप तर्ज खेमटा

कैसे कटी 'योगेश बाबू' बिपतिया कैसे कटी
तन मन धन हम तीनों गँवाये,
मोका पड़ा तब गोली भी खाये
जानत सकल जहान हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
लाला को खोये चन्द्रशेखर को खोये
वीर भगत को झूला झुलाये
दे दी 'यतीन्दर' ने जान हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
लाला का बदला भगत ने चुकाया,
डायर का बदला उद्धम ने चुकाया
रखी थी भारत की शान हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
आजादी का समय जब आया,
चट पूँजीपतियों ने हाथ लपकाया
बन गये खुद मलिकार हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
भाई भाई को धरम पर लड़ावें

खूब चोरबजारी करावें
लेकर तिरंगा निशान हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
जिसने बयालिस में खूब लुटवाया,
माँ बहनों को वेइज्जत कराया
बन गया वही अनदाता बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
हँस हँस के हम पर जो गोली चलाया,
बेटे का कलेजा बाप को दिखाया
रक्षक बना है वही आज हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
जिसने माँ बहनों को नंगा कराया
सरे आम सड़कों पर घुमाया
आज वही कपड़े का मालिक बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)
अपने तो खाते हैं पूड़ी मिठाई
दूध दही मक्खन और खोआ मलाई
तीन छटांक राशन से निकलत बा प्रान बिपतिया कैसे कटी(कै०)
अपने पहनते हैं सेन गुप्ता धोती
जर्गी की साड़ी उनके घर घरमें होती
नंगी माँ बहनें यहाँ बेचें इमान हो बिपतिया कैसे कटी (कैसे०)

———

आर० एस० पी के नारे

हमारा नारा	लालहिन्द
आर० एस० पी०	जिन्दाबाद
भगत सिंह	,,
कमाने वाला	खावेग
खेत किसके	किसानों के
मिल किसकी	मजदूरों की
पंचायती राज्य	बनायेंगे
चोर बजारी	मिटायेंगे
पूजीवाद मिटायेंगे	दुनियां नई बनायेंगे

छप रही है !

दुनियां से गरीबी मिटाने के लिये बलिदान होने वाले अमर शहीद उमा शंकर की जीवनी छप रही है।

२—कांग्रेस का राम राज्य।

३—वाइस राय को एक लाख ९ हजार महीना।

पुस्तक मिलनेका पता।

अमर भारती प्रेस घुघुरानी गली बनारस

आर० एस० पी के नारे

हमारा नारा	लालहिन्द
आर० एस० पी०	जिन्दाबाद
भगत सिंह	"
कमाने वाला	खावेगा
खेत किसके	किसानों के
मिल किसकी	मजदूरों की
पंचायती राज्य	बनायेंगे
चोर बजारी	मिटायेंगे
पूंजीवाद मिटायेंगे	दुनिया नई बनायेंगे

छप रही है !

दुनिया से गरीबी मिटाने के लिये बलिदान होने वाले अमर शहीद उमा शंकर की जीवनी छप रही है ।

२—कांग्रेस का राम राज्य ।

३—वाइस राय को एक लाख १ हजार महीना ।

पुस्तक मिलनेका पता ।

अमर भारती प्रेस घुघुरानी गली बनारस